B.A. II Hons Paper III (History)

'पल्लव कालीन संस्कृति'

भारत के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास में कांची के पल्लवों का युग चिरस्मरणीय है। उन्होंने पेन्नार और तुंगभद्रा के दक्षिण सबसे प्रथम बृहद राज्य की स्थापना की और अपने प्रभाव का विस्तार लंका तक किया।

राजा शासन का केन्द्र था। अभिलेखों में उसे "महाराज" तथा "धर्म महाराज" कहा गया है। पल्लवों का शासन प्रबन्ध सुव्यवस्थित और योग्यतापूर्ण था। शासन में राजा का महत्वपूर्ण स्थान था। विभिन्न विभागों में राजा के सहायता के लिए मंत्री हुआ करते थे। राजा का भार कार्यों में भी लिया करता था। प्राचीन पुरालेखों के अनुसार अनेक अध्यक्षों और राजपुरुषों के अतिरिक्त केन्द्रीय और प्रान्तीय शासन संगठित था। अभिलेखों से मुख्य अधिकारियों का नाम इस प्रकार मिलते हैं। राजकुमार, युवराज, प्रान्तीय शासक, अमात्य या राजा के उच्च अधिकारी, राष्ट्रिक, प्रान्त अथवा जिले के अधिकारी, देशाधिकृत (स्थानीय संरक्षक), ग्राम भोजक (ग्राम का मुखिया), गौल्मिक (सेनानायक या जंगल का अधिकारी) दूतक (संदेशवाहक) संचारन्तक (गुप्तचर) भट मनुष्य (सैनिक) इत्यादि राज्य के आमदनी के मुख्य और भूमि उद्योग-धन्धे और व्यापार थे। कोल्हू, करघा, विवाह, दुकान, सुपारी आदि पर भी कर लगाया जाता था।

शासन की सुविधा के लिए समस्त साम्राज्य कई प्रान्तों में विभक्त था, जिन्हें राष्ट्र या मण्डल कहते थे। शासन की इससे छोटी इकाइयाँ की नाडु और ग्राम थी। कोट्टम के अधिकारी को देशातिक और ग्राम के अधिकारी को पवित्र कहा जाता था। कर एकत्र करने वाले कर्मचारी को मण्डी कहा जाता था। व्यापारियों को देखने वाले अधिकारी को तीर्थिक कहा जाता था। सेना का नायक सैनिक अधिकारी भी होता था। प्रान्तों के ऊपर राजवंश या सामन्त वंश के लोग शासन करते थे। राष्ट्र एवं मण्डलों पर राष्ट्रिक

Scanned with CamScanner

और प्रशासनिक कार्य सम्पन्न करते थे। ग्राम का मुख्य अधि-
कारी मुखिया था। ग्राम सभा को स्थानीय न्याय, रक्षा
और सार्वजनिक हित के काम करने का अधिकार था।
धार्मिक कृत्यों और दान के लिए अलग व्यवस्था होती
थी। नगरों एवं विभागों को राज्य से वृत्ति मिलती थी।
गांव से 18 प्रकार के कर लगाये जाते थे।

जनता की विभिन्न सामाजिक, आर्थिक तथा
धार्मिक गतिविधियों पर शासक का पूर्ण नियंत्रण
रहता था। प्रजा की सेवा तथा संरक्षण जनता के दैनिक
जीवन की बातों की देखभाल करने से राजा का
अपना कर्तव्य मानता था। महासभा की बैठक कक्ष में
एकत्र होती थी और दैनिक कार्यों के लिए एक
कार्यकारिणी थी। जिसका निर्वाचन निर्धारित योग्यता
वाले लोगों के बीच आवश्यक रूप से होता था।
ग्राम ही वह संगठन था जो जीवन और परम्पराओं
के क्रम को बनाये रखने में समर्थ था। ग्राम शासन का
पर्याप्त प्रमाण दक्षिण भारत के अभिलेखों से मिलता
है। हर गांव का एक मुखिया होता था, जो विभिन्न
स्थानों में मुदु. किलान, ग्राम भोजक आदि नामों
से पुकारा जाता था।

साहित्य के क्षेत्र में इस युग में काफी प्रगति
हुई। संस्कृत राज्य भाषा के पद पर थी। पल्लव अभि-
लेख विशेषकर संस्कृत में है और तमिल अभिलेखों
में संस्कृत का प्रयोग भी मिलता है। कांचीपुरम-
का महत्व शिक्षा और कला का केन्द्र था। यहाँ
एक बड़ा विश्वविद्यालय था। दिङ्नाग आदि बौद्ध
और आध्यात्मिक विद्या को प्राप्त करने के लिए
कांची आया था। कदम्बकुल मयूरशर्मन ने भी
यहाँ वेद का अध्ययन किया था। विद्वानों के द्वारा
उनके ग्रंथ आज तक चलते हैं। सिंहविष्णु के दरबार
में दण्डिन, रहता था। दण्डिन के समकालीन
भारवि महाकवि भी उनके समकालीन थे। महेन्द्रवर्मन-

एक प्रतिष्ठित लेखक था और उसने मत्तविलास प्रहसन
की रचना की। साहित्य तथा विविध शास्त्रों को पल्लव-
राजाओं से बहुत प्रोत्साहन मिला। तमिल भाषा का प्रयोग
भी इनके समय में होता था। भास और शूद्रक के नाटकों
के संक्षिप्त संस्करण। अभिनय के लिए पल्लव राजाओं
की सभा में तैयार हुए थे। कांची के निकट कूरम के
२०० मण्डप में 'महाभारत' की कथा का प्रबन्ध-
किया गया। उस स्थान पर 108 परिवार के ब्राह्मण वेदों
के अध्ययन में तल्लीन थे। तमिल भाषा को उत्कृष्ट
कवियों को भी राज-संरक्षण दिया गया। तिरुवल्लु
-वर का ''तमिल कुरल'' विख्यात पुस्तक थी।

पल्लव शासनकाल में कला को भी काफी प्रोत्साहन
मिला। दलवनूर। पल्लावरम तथा वल्लम के मंदिर
मामल्लपुरम और कांची के धर्मराज तथा कैलाशनाथ
रथ मंदिर और सात रथ मंदिर समूह वास्तु मंदिर उनकी
कलात्मक प्रतिभा के सुन्दर स्मारकों के रूप में खड़े हैं।
महेन्द्रवर्मन प्रथम द्वारा आविष्कृत पल्लवों की मंदिर
की शैली दक्षिण भारत में सर्वमान्य थी। उसने
कन्दरा मंदिरों की भवन निर्माण कला को प्रचलित किया।
दक्षिण भारत में भवन निर्माण कला तथा मूर्तिकला
का इतिहास पल्लवों के मंदिरों से प्रारम्भ होता है।
कांची तथा अन्य स्थानों के मंदिरों के अतिरिक्त
मामल्लपुरम के रथों के नाम से विख्यात चट्टानों
से काटकर बनाये गये कई मंदिर इसमें भी
(मूर्तियों में भी) के हैं जिसका श्रेय उस युग के
पल्लव राजाओं को जाता है। मामल्लपुरम के सात रथ
इसी के कारण हुए हैं। मामल्लपुरम के रथ छोटे मंदिर
हैं। जिनमें से प्रत्येक एक ही पत्थर (चट्टान) में
काटा गया है। ये समुद्रतट के निकट हैं तथा पल्लव
वंश के महान राजा नरसिंहवर्मन द्वारा स्थापित
मामल्लपुरम (महाबलीपुरम) नगर की शोभा
बढ़ाते थे। इन मंदिरों को नक्काशीदारों ने कला का नमूना बनाया।

पंचपाण्डव रथ रथगाओं पाण्डवों तथा उनकी पत्नी द्रौपदी के नामों पर हुआ है — धर्मराज रथ, भीम रथ, द्रौपदी रथ इत्यादि। इन्हीं की चट्टानों में काटी हुई अनेक गुफाएं भी पायी जाती हैं गुफाएँ विविध सुन्दरतम उत्कीर्ण आकृतियों से अलंकृत हैं मंदिर स्थलों महाबलि-पुरम में भी काटकर बनाया गया है गंगावतरण का दृश्य। जिसे अर्जुन का पश्चाताप भी कहा जाता है अपूर्व है पल्लव वास्तु शैली का प्रभाव सुदूर पूर्व के भारतीय उपनिवेशों पर भी पड़ा। विशेषतौर का प्रभाव जावा, कम्बोडिया और अनाम की कलाओं पर देखा जाता है। पल्लव कला का आदर्श उदाहरण कांची का कैलाशनाथ मंदिर तथा [illegible] पैगोडे के ढंग का 'रथ' मंदिर है यहाँ प्रतिमा पुष्कोष्ठ पर पिरामिड के ढंग का शिखर है और स्तम्भ युक्त मंडप है जिसके चतुर्दिक छोटे-छोटे पूजा गृहों की श्रृंखला है। कुछ मंदिरों में राजा रानी का सजीव चित्रण हुआ है महेन्द्रवर्मन के उत्तराधिकारियों में अपने नाम का अंकन के द्वार पर स्वलिखित मंदिर का निर्माण कराया। महेन्द्रवर्मन के मंदिरों की विशेषता उनके स्तम्भ हैं। इनमें से धोन नरसिंह वर्मन द्वितीय ने विख्यात कैलाशनाथ मंदिर तथा राजसिंहेश्वर का मंदिर बनवाया। कांची का ऐरावतेश्वर तथा महाबलीपुरम का तटमंदिर 'शोर' मंदिर भी उसी के बनाये हुए हैं। पल्लवकाल में मंदिरकला — शैली के विकास के चार क्रम और शैलियाँ हैं —

1. महेन्द्र शैली — चट्टान को काटकर गुफा [illegible] [illegible]।
2. नरसिंहवर्मन का चरण — पांचों रथों का निर्माण अलंकृत मुखद्वार, आकर्षक [illegible] सिंह स्तम्भ और अलंकृत दीवार।
3. राजसिंह शैली — कैलाश मंदिर और महाबलीपुरम का मंदिर।

Scanned with CamScanner

5. अपराजित द्वारा पूर्वीत चोल शैली।

पल्लव शैली ने वास्तुकला को देन दी है। सुदूर पूर्व भारतीय उपनिवेशों की वास्तुकला को अत्यधिक प्रभावित किया। कम्बोडिया, अन्नाम और जावा के मंदिरों में द्रविड़ शैली का प्रभाव स्पष्ट है। नरसिंहवर्मन प्रथम के महाबलीपुरम में बनाये गए पाण्डवों और द्रौपदी के रथ, पत्थरों को काटकर बनाये कृष्णमंडप और हाथी, कुचला हुआ गोवर्धन धारण, अर्जुन की तपस्या तथा महिषासुर वध का चित्रण अद्वितीय है।

प्रो० पर्सी ब्राउन के शब्दों में, "दक्षिण भारत के इतिहास का निर्माण करने वाले सभी महान वंशियों में से किसी का भी शासनकाल की वास्तुकला पर इतना प्रभाव नहीं है जितना पल्लवों का था। उनके निर्माण कार्य ही द्रविड़ शैली के आधार बने।"

आठवीं शताब्दी में भारत पर छाने वाले महान धार्मिक सुधारों का आरम्भ पल्लवकाल में ही हुआ। इस युग में वैष्णव धर्म और शैव धर्म को भी प्रोत्साहन मिला था। ह्वेनसांग के अनुसार कांची के 100 विहारों में लगभग 10000 बौद्ध भिक्षुक थे। महेन्द्रवर्मन स्वयं पहले जैन था बाद में शैव हो गया था। अलवार संतों की प्रधानता भी इस युग में थी। इनके प्रचार में वैष्णव धर्म भी फूला-फला और शैव धर्म की प्रधानता बढ़ती गई। शंकराचार्य इसी युग में हुए थे। वे उच्चकोटि के दार्शनिक और अद्वैत सिद्धान्त के प्रवर्तक थे। उन्होंने मैसूर में शृंगेरी, काठियावाड़ में द्वारका, उड़ीसा में पुरी और हिमालय में बद्रीनाथ मठ की स्थापना की। पल्लवों की अभिलेखों और उनकी कलात्मक वस्तुओं से स्पष्ट होता है कि वे लोग धर्म के मामले में सहिष्णु थे। राज्य की ओर से धार्मिक कृत्यों के लिए व्यवस्था की जाती थी।